शोध मंथन Vol. XIV No.II Apr.-June 2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

प्रकाश मनु की बाल कविताओं में है एक हँसता–खिलखिलाता बचपन

प्राप्तिः 02.06.2023
स्वीकृतः 25.06.2023

41

डॉ० रमेश यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर

अमित कुमार
शोधार्थी, हिन्दी विभाग,
विजय सिंह पथिक राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
कैराना (शामली)
ईमेलः *amitkumar260793@gmail.com*

सारांश

प्रकाश मनु जी बच्चों के चहेते बाल साहित्यकार हैं उन्होंने बाल साहित्य के लिए पूरी तन्मयता से लिखा और जी भरकर लिखा। उनका हँसता खिलखिलाता चेहरा छोटे–छोटे बच्चों के दिल में उतर गया है। मनु जी ने अपनी बाल कविताओं में अपने बचपन को बार–बार जिया है और बार–बार उनका कविताओं, गीतों, शिशुगीतों आदि के माध्यम से वापस बचपन में लौट जाने का मन करता है। मनु जी की ये अनोखी विशेषता है कि वे अपने काल्पनिक बिंबो और किस्सागो शैली के माध्यम से छोटे–छोटे बच्चों को अपनी और खींच लेने की पूरी ताकत रखते है और इन्हीं बाल प्रवृत्तियों के कारण प्रकाश मनु जी ने बाल साहित्य की हर विधा में अपना सर्वोत्तम स्थान बनाया हुआ है।

मुख्य बिन्दु

अनायास, जमघट, फर्माइसें, खुलर–खुलर हँसना, चुलबुली, ठिठोली, अजब–गजब, लबादा (तंबू), सहृदयजन, अनुभव, जागरूकता।

प्रकाश मनु जी बाल साहित्य के कला शिल्पी है, वे बच्चों के लिए लिखी गई बाल कविताओं में शब्दों का ऐसा जादू बिखेरते चलते है कि सहृदयजनों व छोटे–छोटे बच्चों का मन अनायास ही उनकी कविताओं की ओर खींचा चला आता है। प्रकाश मनु जी के पास बाल कविताओं का सृजन करते समय बालकाव्य बिंबों का और अनेकानेक चित्रों का मानो जमघट लगा रहता है। काव्य सृजन करते समय उनके पास बच्चों का भरा पूरा संसार होता है। मेरी वैसे तो मनु जी से अनेक बार बात हुई परन्तु एक बार वे फोन पर ही मुझे बता रहे थे कि ''अमित बेटे! जब मैं अपनी कोई बालकृति लिखने बैठता हूँ तो मानो अनेक छोटे–छोटे बच्चों का संसार मेरे सामने आकर अपनी अलग–अलग फरमाइसें और बालकल्पनाएँ लेकर खड़ा हो जाता है और मुझसे लिखवाने को कहता है और मैं एकांत में बैठा खुलर–खुलर अकेला ही हँसता रहता हूँ और रचनाएँ अपने प्रवाह में बढ़ती चली जाती है।'' यह सच भी है उनकी बाल कविताओं में वो ही बच्चों का–सा नटखटपन, वहीं चुलबुली–सी छोटी–मोटी शरारतें,

वहीं बच्चों की हंसी ठिठोली और अजब–गजब कल्पनाएँ व अजब–गजब कारनामें जिन्हें बच्चे पढें तो बस पढ़ते चले जाऐं। कविताओं के साथ ही चित्रों का ऐसा संयोजन है कि कोई भी साधारण से साधारण पाठक, छोटे–छोटे बच्चें व बड़े भी उनके संग्रह के दीवाने हो जाए और खींचे चले जाऐं। सर्वाधिक पाठकों व छोटे बच्चों के दिलों पर राज करने वाली उनकी बहुत सुंदर बाल कविता 'हाथी का जूता' है। इस कविता की साहित्यकारों व बाल पाठकों ने भर–भरकर प्रशंसा की। अब कविता में होता यह है कि एक बार हाथी दादा साथियों का मेला चलने की दावत दें बैठे–

''एक बार हाथी दादा ने/खूब मचाया हल्ला
चलो तुम्हें मेला दिखाता हूँ/खिलवा दूँ रसगुल्ला''

लेकिन थोड़ी देर में ही हाथी दादा के मन में एक बात आती है कि मेले में तो सभी सुंदर–सुंदर कपड़े व अच्छे से जूते पहनें हुए लोग होंगे तो मैं क्यों मेले में बिना कपडों और जूतो के जाऊँ और फिर उन्होंने अपने दोस्तों से कहा–

''पहले मेरे लिए कहीं से/लाओ नया लबादा,
अधिक नहीं बस एक तम्बू ही/मुझे सजेगा ज्यादा।''

अब लबादे का काम तो जैसे–तैसे हाथी दादा ने तम्बू ओढ़कर चला लिया मगर फिर बड़ी समस्या बन गई जूते की और वे तेजी से दौड़कर जूते की दुकान की ओर पहुँचे, मगर दुकानदार तो हाथी के पैरों का नाप देखकर ही घबरा गया और बोला–

''दुकानदार ने घबराकर/पैरों को जब नापा,
जूता नही मिलेगा श्रीमान/कह करके वह काँपा''

मगर जब कहीं भी हाथी दादा के पैरों के जूते नहीं मिले तो वे मेला न जाने की मन मे ठानकर कहते हैं–

''खोज लिया हर जगह/नहीं जब मिले कहीं भी जूते.
दादा बोले छोड़ो मेला/नहीं हमारे बूते।''[1]

ये प्रकाश मनु की ही कविताओं का जादू है जो छोटे–छोटे बच्चों व सहृदय पाठकों पर तारी रहता है। तभी तो देश के कोने–कोने से बच्चे उनके काव्य–संग्रह को ढूँढ–ढूँढकर पढ़ते रहते हैं। प्रकाश मनु जी की कुछ इसी प्रकार की विषेशताओं की ओर इशारा करते हुए 'सृजन मूल्यांकन के प्रकाश मनु' विषेशांक में फहीम अहमद लिखते हैं कि ''विविधता और कहन का नयापन उनकी कविताओं को खास बनाता है। बचपन की सुरीली तानों से सरोबार उनकी कविताएँ सीधे बच्चों के मन से जुड़ जाती हैं। हास्य का पुट भी कई कविताओं को अद्भुत बनाता है। जब वे चुटकी लेते हैं या चुहल करते हैं तो बरबस बच्चों के होंठों पर मुस्कान तैर जाती है।''[2] प्रकाश मनु जी बाल कविताओं के सृजन के समय उनमें ऐसे खो जाते हैं, मानों बाहर की स्वार्थ भरी दुनिया, छल–छद्म, भीड़–भाड़ के जंगल से उन्हें कोई वास्ता ही न हो। बच्चों की दुनिया ही उनका अपना भरा–पूरा संसार है उसी में वे जीते हैं, उसी में सुख–दुःखानुभूति का अनुभव करते हैं, उसी में वे बच्चों की संवेदनाओं से पूरी तरह जुड़ पाते हैं। उनके साथ– हँसते हैं, खेलते हैं व पूरी तरह से एक बार फिर उनके बचपन में लौटकर अपने जीवन को दोबारा से जीने का प्रयास पल–प्रतिपल करते रहते हैं।

अब देखिए उनकी छोटे–छोटे बच्चों को हँसाती, उनका मनोरंजन करती बहुत ही सुंदर बाल कविता 'मेंढ़क मामा' जिसमें एक छोटा–सा बालक बाल–कल्पना करता है कि मेंढ़क, जब बारिश आती है उसमें किस प्रकार उछलता–कूदता फिरता है। बच्चे को चिंता होती है कि कहीं पानी में भीगकर वह बीमार न पड़ जाए और कविता के अंत में बच्चा मेंढ़क से पूछता भी है कि आप बोम्बे जाकर बारिश से बचने के लिए अपना बढ़िया–सा रेलीकोट कब ला रहे हो। बाल कविता की पंक्तियाँ इस प्रकार है–

''मेंढक मामा
मेंढक मामा
खेल रहे क्यों पानी में,
पड़ जाना बीमार कहीं मत
वर्षा की मनमानी में।
मेंढक मामा
मेंढक मामा
नभ में बादल छाए हैं,
इसीलिए क्या टर्र–टर्र के
स्वागत गीत सुनाए हैं।
मेंढक मामा
उछलो कूदों
बड़े गजब की चाल है,
हँसते–हँसते मछली जी का
हाल हुआ बेहाल है!''

और कविता के अंत में बच्चा मेंढ़क से पूछता है कि–

''मेंढ़क मामा
सच बतलाओ
कब तुम बोम्बे जाओगे,
बढ़िया रेलीकोट सिलाओ
फिर हीरो बन जाओगे।
एक जगह जोड़ दो ये लाइन।।''[3]

प्रकाश मनु जी की बाल कविताओं की एक अन्य विशेषता यह भी है कि वे बच्चों को अपनी बाल कविताओं में मनोरंजन और खूब हँसाने के साथ–साथ ही बातों–बातों में ही अनेक शिक्षा देते रहते हैं। पढ़ाई के प्रति जागरुकता तो उनके सम्पूर्ण बाल साहित्य का मानो मूल मन्त्र है जिसमें वे अपनी बाल कविताओं, कहानी, उपन्यास आदि में बीच में कहीं न कहीं किसी न किसी रूप में पिरो ही देते हैं। इसका एक बहुत सुंदर उदाहरण उनकी एक बाल कविता 'मम्मी' में इस प्रकार देखा जा सकता है–

''परीलोक की कथा–कहानी
हँसकर मुझे सुनाती मम्मी,
फूलों वाले, तितली वाले
गाने मुझे सिखाती मम्मी।
खीर बने या गर्म पकौड़ी
पहले मुझे खिलाती मम्मी
होमवर्क पूरा कर लूँ तो–
टॉफी–केक दिलाती मम्मी।
काम अगर में रहूँ टालता
तब थोड़ा झल्लाती मम्मी
झटपट झूठ पकड़ लेती हैं.
मन ही मन मुस्काती मम्मी।''[4]

इस बाल कविता में मम्मी का अपने बच्चे के प्रति वात्सल्य भाव के साथ–साथ उसके भविष्य की चिंता को भी कवि ने चित्रित करने का प्रयास किया है। कैसे एक माता अपने पुत्र को परीलोक की कथा–कहानी सुनाती है, तितलियों के गीत गा–गाकर सीखाती है और पुत्र द्वारा स्कूल का होमवर्क (कार्य) पूरा करने पर उसे टॉफी व कैक दिलाकर उसे पढ़ने के प्रति उत्साहित करती है और बच्चे के थोड़ा आलसी होने पर उसे बड़े प्यार से दिखावटी गुस्सा दिखाकर डाँटती भी है और झट से बच्चे द्वारा बोला गया झूठ पकड़ लेती हैं और अपने पुत्र के प्रति अपार वात्सल्य बरसाकर मन ही मन मुस्कुराती रहती है। इस प्रकार की बाल कविताओं का न जाने अपार संसार मनु जी के पास है। ढेरों सारी बाल कविताएँ हैं जो बच्चे को पल–प्रतिपल हँसाती रहती है, उनके साथ खेलती है हँसती हैं, गाती हैं और जीवन के अनेक रूप–रंगों में बच्चों को जीना, हँसना, बोलना सीखती है।

हिंदी बाल कविताओं का अपना एक अलग ही जादू है जो बच्चों को उनके मनोरंजन के साथ–साथ उन्हें समाज से और समाज की वर्तमान परिस्थिति एवं दशा से जोड़ने का प्रयास करती है। हिंदी बाल कविताओं की विशेषताओं की ओर प्रकाश डालते हुए प्रकाश मनु जी कहते है कि ''हिंदी बाल कविता में विचार–तत्व है, पर उसे उपदेश या विचारों से बोझिल नहीं कहा जा सकता। उसमें एक खिलंदड़ापन लगातार देखा जा सकता है और खेल–खेल में बड़ी से बड़ी बातें कह देने की आश्चर्यजनक कूवत भी।''[5]

यह सच भी है कि बाल कविताओं की सर्वप्रथम विषेशता और शर्त भी यही है कि बाल कविताएँ सर्वप्रथम बच्चों के भरपूर मनोरंजन के लिए लिखी जाएँ जिनको पढ़ते समय बच्चे खूब आनन्द लें, खूब खिलखिलाकर हँसे और झूमते नाचते गाते वे कविताएँ उन्हें जबानी याद रहे। बचपन में बच्चे का मन बहुत चंचल होता है और वह नई–नई अजीबो–गरीब कल्पनाएँ करता रहता है। यदि शुरुआती कविताओं में बच्चों को परियों की कथा–कहानियों से परिपूर्ण कविताएँ तितली, भालू, चाँद, तारों की रोचक भरी कल्पनामिश्रित कविताएँ परोसी जाएँ तो बच्चों का मन बाल कविताओं की और ज्यादा आकर्षित होगा

क्योंकि उन किस्से कहानियों और चुहलभरी बालसुलभ कल्पनाओं से छोटे बच्चों का मन जल्दी और ज्यादा रमता है। यहीं बात प्रकाश मनु जी कन्हैयालाल मत्त जी से भी पूछते है जिसका जिक्र उन्होंने अपनी आत्मकथा **'मैं मनु!'** में भी इस प्रकार किया है– ''मुझे याद हैं, बरसों पहले मैं मत्त जी से मिला था। बच्चों के प्रसिद्ध बाल कवि कन्हैयालाल मत। मैंने उनसे पूछा कि ''मत्त जी आपके विचार से एक अच्छी बाल कविता क्या है?'' सुनकर उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, ''मनु जी मैं तो उसी को अच्छी बाल कविता मानूँगा, जिसे पढ़ या सुनकर बच्चे के मन की कली खिल जाए। यानी जो बच्चों को आनंदित करें। वरना आप चाहे जितने भी जतन करें, चाहें– जितने अच्छे–अच्छे विचार उसमें लेकर आएँ, अगर वह बच्चों को आनंदित नही करती तो वह अच्छी बाल कविता नहीं हो सकती।''[6]

फिर चाहे बाद में हम बच्चों में मनोरंजन के साथ–साथ उसमें समाज की वर्तमान दयनीय दशा, भ्रष्ट राजनीतिक तन्त्र धोखाधड़ी, चोरी, लालच जैसी कुरीतियों की बुराई के निराकरण व परिणाम भी बाल कविताओं में समाहित करते चलें परन्तु उनका बाल कविताओं में मिलाया जाना वैसा ही रहना चाहिए जैसे 'दूध में धीरे–धीरे पानी' ताकि मनोरंजनता का पुट उन बाल कविताओं में बराबर बना रहे और उनमें कहीं भी नीरसता या उदासीपन की भावना मनोरंजन पर तारी न हो जाए, यानी बातों ही बातों में बच्चे समाज की दशा व दिशा को धीरे–धीरे समझने लगे।

सन्दर्भ

1. प्रकाश, मनु. (2022). मेरी प्रिय बाल कविताएँ. विद्यार्थी प्रकाशनः के–71, कृष्णा नगर, दिल्ली–110051. पृष्ठ **21.**
2. बबल, अनामीशरण. (सं०)., स्वामी, शरण बबल. (2019). सृजन मूल्यांकन – यह जो मनु है. ए–3/154–एच, मयूर विहार, फेज–3, दिल्ली–110096. अंक जुलाई. पृष्ठ **108.**
3. प्रकाश, मनु. मेरी सम्पूर्ण बाल कविताएँ. शिलाक्षर सदन प्रा०लि०ः शॉप नं०7, जैन बिल्डिंग, 22/4735, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली–110002. पृष्ठ **88.**
4. वही. पृष्ठ **106.**
5. प्रकाश, मनु. (2020). हिन्दी बाल साहित्य नई चुनौतियाँ और संभावनाएँ. कृतिका बुक्सः 19, रामनगर एक्सटेंशन–2, निकट पुरानी अनारकली का गुरुद्वारा, दिल्ली–110051. पृष्ठ **29.**
6. प्रकाश, मनु. (2021). मैं मनु (आत्मकथा). श्वेत वर्णा प्रकाशनः 232 बी–1, लोकनायकपुरम, नई दिल्ली–110041. पृष्ठ **26.**